आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 337 ARYA SABHA MAURITIUS *1st Aug. to 10th Aug. 2016*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

तैंतीस देवता ईश्वर में ही समाहित

ओ३म् यस्य त्रयस्त्रिंशद् देवा अंङ्गे सर्वे समाहिताः ।
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः ।।

TRENTE-TROIS DEVĀS / DEVATĀS EXISTENT EN DIEU

Om ! Yasya trayastrinshad devā ange sarve samāhitāh.
Skambham tam bruhi katamah svideva sah.

Atharva Veda 10/7/13

Glossaire / Shabdārtha

deva - L'Être Suprême qui est unique au monde; **ange** – dans les différentes parties; **yasya** – qui, **sarve** – tous, **trayastrishat** – les trente-trois; **Devās** (aussi connus comme ***devatās***) – Ces mots désignent les forces cosmiques, les corps célestes lumineux et les éléments de la nature. Ils sont inertes (sans vie) et ils ont été créés par (L'Être Suprême /Dieu). Ils forment parties de l'univers. Ils ont une contribution immense dans notre vie. Sans eux, la vie n'existera pas sur la terre. Ils nous sont indispensables. En Hindi, les grands sages et autres personnes intègres, magnanimes sont aussi appelés '*devās*' ou '*devatās*' car ils nous aident et nous donne généreusement sans rien nous demander en retour; **samāhitāh** – ils se trouvent ou ils existent en; **sah** – Lui (Dieu); **tam** - qui est; **skambham** – le pilier de l'univers; **bruhi** – on peut le dire.

Avant-propos

Dieu est le créateur et le maitre suprême de l'univers. Il est unique en son genre. Il n'y a qu'un seul Dieu. Il ne change jamais. Dans l'état qu'il est à présent, Il a été ainsi dans le passé et il sera de même dans le futur. Il reste toujours éveillé et pleinement conscient. Il n'est jamais en état de sommeil. Il n'est pas né de quiconque (*ajanmā*). Il est éternel n'a ni commencement ni fin. (*anādi et ananta*). Lui seul est la cause de la création, du maintien et de la dissolution de l'univers.

Il est incorporel (n'a pas de corps physique, forme, trait ou image), invisible, intouchable, impérissable, indivisible, intrépide (exempt de crainte), invincible (personne ne peut le vaincre, le détruire ou l'exterminer).

Il est infini. Personne n'a jamais pu savoir la limite de sa puissance, de sa connaissance, de son savoir-faire et ses autres compétences. Etant Omniscient, Il est au courant des pensées de tout le monde, mais personne ne connait ses secrets ou ses pensées.

Il est le plus saint, le plus pur et il n'a aucun défaut ou point faible. Il est immaculé, parfait et miséricordieux.

Il est tout-puissant, Omniprésent et pénétrant tout. Il est présent dans tout l'univers et le contrôle.

Il a une emprise totale sur toutes les forces cosmiques, tous les corps célestes lumineux et autres éléments de la nature appelés '*devās*' ou '*devatās*'. C'est Lui qui les a créés, à l'exception de l'âme (*jeeva*) et de la matière primordiale (*prakriti*). Il est leur support tous comme l'arbre est le soutien de toutes ses branches.

Il est aussi la source de toute lumière et illumine l'univers. Pour cette raison Il est resplendissant. Il est l'unique (le seul) créateur de tous les êtres vivants de l'univers. Toutes les créatures puisent leur force et l'énergie de cette source divine. Il les aime toutes, les protège, les soutient et les nourrit.

De ce fait l'être Suprême est appelé *'Devon ka Deva'* ou '*Mahādeva*' en Hindi. Il n'y a qu'un seul Dieu. Il est le créateur des *devās* ou *devatās*. C'est Dieu Suprême et Unique qui est digne de notre adoration, mais pas les *devās* ou les *devatās*.

De par son immensité et de ses autres attributs Dieu existe dans l'univers entier et même au-delà et l'univers existe en lui. *(Hiranya Garbha)*

Il n'y a pas un seul endroit dans l'univers où il n'est pas présent. Ainsi c'est évident que tous les *devās* ou les *devatās* se trouvent également en lui et sont tous sous son contrôle.

.... à suivre

N. Ghoorah

Bibliographie : Satyārtha Prakāsh de Maharishi Dayanand Saraswati

पति-पत्नी का सम्बन्ध

डॉ० उदय नारायण गंगू,ओ.एस.के, आर्य रत्न, प्रधान आर्य सभा

जब पुत्र-पुत्रियाँ अपने पाँवों पर खड़े हो जाते हैं, तब माता-पिता फूले नहीं समाते। वे बड़ी धूमधाम से अपने लड़के-लड़कियों का विवाह कर देते हैं। बहुत से युवक-युवतियाँ अच्छे पति-पत्नी बनकर माता-पिता की प्रसन्नता को कई गुना बढ़ा देते हैं; परन्तु कुछ ऐसे भी पति-पत्नी दिखाई देते हैं, जो चार दिनों में ही एक-दूसरे के लिए नीम से भी अधिक कड़ुवे बन जाते हैं। इस कड़वाहट के कई कारण होते हैं, जिनमें एक कारण है - 'अहंकार।'

अपने बड़े घर की बेटी वा बेटा होने के अहंकार, अपने कुल के अहंकार, अपनी विपुल सम्पत्ति के अहंकार, अपने सुन्दर होने के अहंकार, अपने उच्च पद के अहंकार की आँधियों ने दाम्पत्य जीवन की फुलवारी को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है।

अहंकार के नशे में चूर अनेक दम्पति अपने जीवन में बिगाड़ उत्पन्न करके दुख-सागर में गोता लगाते दृष्टिगोचर होते हैं। यहाँ तक कि सैकड़ों का वैवाहिक सम्बन्ध समाप्त हो गया है।

अत्यावश्यक है कि अहंकार रूपी दैत्य का वध किया जाय, ताकि पति-पत्नी के सम्बन्धों में कोई दरार न पड़े। इसके लिए विवाह संस्कार के अवसर पर की जाने वाली प्रतिज्ञाओं को बारम्बार स्मरण करना परमावश्यक है।

सम्पादकीय

युवावस्था

हमारे जीवन में युवावस्था बहुत ही महत्वपूर्ण अवस्था मानी जाती है। इसी अवस्था में युवा-युवतियाँ अपने शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक और आत्मिक विकास करने का अवसर पाते हैं। अपनी आयु, योग्यता, बुद्धिमत्ता और क्षमता प्रकट करते हैं, भावी जीवन का आधार युवावस्था में ही स्थापित किया जाता है।

युवा वर्ग की अपनी अलग दुनिया होती है। वे स्वतंत्रता पूर्वक अपने तौर-तरीके से जीना पसंद करते हैं। वे बड़े ही जोशीले, सबल, सुदृढ़ और सुयोग्य होते हैं। उन्हीं के कंधों पर परिवार, समाज और राष्ट्र का भार रहता है। उनके ही पुरुषार्थ और अनुभव से सर्वांगीण वृद्धि होती है। इसी लिए यह कहा जाता है कि हमारे जवान तो अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के स्तम्भ माने जाते हैं।

आधुनिक युग तो ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी युग है। इन नवीन साधनों द्वारा हमारी संतानें विभिन्न क्षेत्रों में अद्‌भुत ज्ञान-विज्ञान हासिल करने का भाग्य प्राप्त कर रही हैं। ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी दुनिया से उनका नाता जुड़ गया है। वे वीर, साहसी, अनुभवी और पुरुषार्थी तो हैं, परन्तु उनमें से अधिकतर जवान ईश्वर भक्ति, सत्संग सामाजिक सेवा एवं धार्मिक शिक्षा से अलग ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। इन कारणों से शिक्षित होकर भी गुणवान और चरित्रवान दिखाई नहीं दे रहे हैं। उन युवा-युवतियों को आदर्श ब्रह्मचर्य का पाठ पढ़ाने की ज़रूरत है।

आज जीवन की भाग-दौड़ में फंसे रहने के कारण बहुत से माता-पिता अपनी संतानों को सही मार्गदर्शन कराने में असमर्थ दिखते हैं। इनकी लापरवाही से उनके बच्चे बिगड़ते जा रहे हैं। उनके कर्मों और व्यवहारों में कई प्रकार के दोष नज़र आ रहे हैं। हमें उन युवकों को सुधारने की अति आवश्यकता है।

आर्य युवा दिवस के अवसर पर हम अपने युवावर्गों से यही माँग करते हैं कि वे अपनी भूल के कारण कुसंग में न पड़े, वे नशाखोरी, जुआखोरी, दुराचार और धोखेबाज़ी से दूर रहें। आज हमारे इस छोटे से देश में यह देखा जा रहा है कि हमारे कई भोले-भाले नादान बच्चे मादक द्रव्यों के शिकार हो रहे हैं। कितने नाबालिग़ कुमार्ग पर फिसल पड़े हैं। हमें उन अबोधों को उस दयनीय अवस्था से निकालना है, तभी उनका जीवन सफलता की ओर अग्रसर हो सकेगा । हमारी वृद्धावस्था की मज़बूत लाठी हमारे आज के किशोर ही है।

हमारे जवानों के स्वास्थ्य, बल, ज्ञान, परिश्रम, अनुभव तथा तप-त्याग और धार्मिक ज्ञान के बल पर सबल परिवार, समृद्ध समाज और राष्ट्रीय उत्थान निश्चित है। मेधावी ब्रह्मचारियों के सहयोग से गृहस्थाश्रम की अच्छी नींव पड़ती है । अस्वस्थ, दुराचारी, चरित्रहीन तथा अयोग्य युवाओं की वृद्धि से हमारा भविष्य पतनावस्था में होता है। इसी कारण हमें बड़ी समझदारी, प्रेम और सहयोग के साथ अपने पुत्र-पुत्रियों को श्रेष्ठ, सज्जन और धर्म प्रिय बनाने की ज़रूरत है।

हमारे युवा-युवतियों को मिसियों-जेओवा वालों के फंदों से बचाने का समय आ गया है। जिनके फंदे में पड़कर हमारे कितने जवान हम से अलग हो रहे हैं। वैदिक संस्कार के अभाव में वे भटकते जा रहे हैं। उनकी रक्षा करना हमारा धर्म है। हमें अपने समाजों की ओर से आर्य युवक संघों की स्थापना करनी चाहिए, जहाँ वे अपने धार्मिक धरोहर प्राप्त कर सके। यदि हम अपने उभरते हुए जवानों को संस्कारी बनाने में सफल हो पाएँगे तो हमारे आज के जवान कल के सुयोग्य गृहस्वामी, समाज-सेवी और राष्ट्र नेता अवश्य ही बनेंगे ।

बालचन्द तानाकूर

My experiences during my recent visit to the West (May-June 2016)

Prof. Soodursun Jugessur, Arya Bhushan

After the demise of my wife last January, I decided to take a fairly long leave from my multiple engagements here in Mauritius and see my children in Montreal, Canada, and relatives on the continent. My second grandson was born in early April and my presence was required to officiate a havan ceremony in the home of my elder son Anshuman who was the proud father of Rohan. Overall I spent two months visiting Canada, USA and England, and I wish to share some of my experiences with readers of Aryodaye so that they become aware of things that are happening outside and that will in due course affect us, unless we take appropriate measures now.

Before reaching Montreal after a long two-days air trip, I had already informed Anshu on what he should have for the Yajna, and he had purchased everything, the havan kund, saamagri, ghee and other requisites. Canadian customs do not allow anybody to bring such things without a permit. I had planned to go to the Mount Royal Park nearby to get the wood (samidhaa) for the hawan, but to my surprise even that had been purchased from the puja shop there! I asked him how much he paid for the wood, and he told me it was ten dollars! You cannot cut anything from parks or forests there without permission. Indian shops must be making a fortune from the sale of such goods there!

I had translated all the essential hawan mantras into English, and after every ritual I explained the meaning of the same as there were Canadian bahus and son-in-law participating in the hawan ceremony. In order not to allow the ceremony to exceed one hour, I had chosen only those mantras that were most appropriate, realizing that there is the fear of repetition in many. After the ceremony we all blessed baby Rohan and deep within me I prayed that he will carry on the flame of Vedic (Arya) culture and grow into a noble soul. We then shared the delicious vegetarian meal that Anshu had prepared.

As each of my three children has his/her own home in and around Montreal city, I used to spend a week with each of them in rotation. When necessary, I did the cooking myself to ensure that I get the type of meal I like, as I dislike going to restaurants for eating. You never know what they do in their closed kitchens! Twice when I was cooking daal along with my son-in-law, in the absence of my daughter who was on mission in Africa, I had incidents I can never forget. At home I had never been instructed to put the required amount of water in pressure-cookers up to a marked level. So on one occasion the absence of adequate water in the black lentil daal in the pressure-cooker made it burn and stick to the bottom, and I had a terrible time cleaning the cooker! On another occasion when I was cooking red lentil, I put water above the marked level in the pressure-cooker, and soon it started spurting out of the cooker on to the kitchen wall! I got scared, and put off the cooker immediately, and this time it was my son-in-law who cleaned up all the mess! These are incidents that we all enjoyed relating to the family.

Now on a more serious note, I had the opportunity to address the Mississauga Arya Samaj in Toronto during my trip to that city. I am very grateful to Mr. Raju Kapila, a frequent visitor to Mauritius as the former youth leader of the Nairobi Arya Samaj, who has now migrated to Canada along with his family. The Secretary of the Samaj had asked me beforehand to let him know the theme of my talk. It was 'Revitalizing the Arya Samaj and the role of parents in promoting family harmony and stable society.' A week earlier, by email, they had already informed all the members and given them a short bio-data of mine.

I was accompanied by a nephew of mine, one Mr. Vinay Groodoyal, and his family. It was an occasion to introduce him to Mr. Raju Kapila, and get a team to organize the Arya Yuvak Sangh there and work for the Arya Samaj. The hall was full with around fifty to sixty people, ladies and gentlemen, and as usual, few young people. They had participated in a hawan that preceded the talk which was well received, with many questions from the audience. Some elders spoke of their own difficulties in bringing the younger generation along with them to ensure renewed blood in the samaj. My exposé of the Sukhi Parivaar program to instill proper sanskaara and ensure solidarity in the family appealed to them, as they saw in it the seeds of attracting the youth. Further I elaborated on the 'survey of needs' we have just started within the Arya Sabha, with the objective of knowing what our intellectuals and professionals, along with their children, wish to see and contribute in the rejuvenation of the samaj. These people are usually absent from the activities of the samajs. It is noteworthy that a couple of families from Mauritius who have settled there are the only enthusiastic young members. They agreed to form a team with other youths to organize a youth wing in the samaj. At the end of the talk they appealed to me to stay behind for a few more months to help them reorganize their activities. Unfortunately my own activities in Mauritius were calling me back. At the end of the session, we enjoyed the sumptuous delicacies prepared by some of the members.

The problem of disinterest on the part of the younger generation of the Arya Samaj is unfortunately a prevailing one, wherever our movement is still alive. We all know WHAT to do but we ignore HOW to do it to change the situation. Our programs have to change and we should start studying the impact of our usual activities in order to bring the required changes.

Wherever I went in the cities I visited, I saw a plethora of goods, especially food products of multiple brands and origins, flooding the shelves. Consumerism as a creed has anchored itself fully in those societies that ignore the environmental impacts of their way of living. I felt sad to see the amount of waste that is being produced by them as a very small percentage of which would have fed millions in the developing world and met their basic needs. Repeatedly the proverb 'where wealth accumulates and man decays' was coming to my mind! In Canada, next to the college dormitories outside I saw tables, chairs, desks, beds and wardrobes thrown away. At another place in England I saw a big container in front of a house, full of fine doors and windows with their glass panes, electrical goods, and other very useful things that were just being dumped for the simple reason that it was time to renew and upgrade the furniture and belongings. The owners had to show to their friends that they possessed the latest and best! My heart used to bleed when I thought of the multiple terrorist attacks, violence and crimes, broken families and rebellious youths that were on the increase everywhere. Drugs, alcohol, sex and violence are now even here in Mauritius. Now we have to bring the teachings of the Vedas and Upanishads amidst them! May God guide us!

As I said earlier, we need to share our experiences, starting in our own homes and societies, so that others know what we do and feel. That may help them to make their own right decisions.

sjugessur@gmail.com 21/07/16

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं । लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

गतांक से आगे

आर्यसमाज द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ : उद्‌भव, विकास एवं उनका सिंहावलोकन

श्रीमती शान्ति मोहाबीर,एम.ए.

जागृति : १९३९

यथा नाम तथा गुण वाली उक्ति - 'जागृति' पत्र पर यह पूर्णरूपेण खरा उतरती है। हिन्दू-नवजागरण हेतु 'जागृति' का प्रकाशन सन् १९३९ में प्रारम्भ हुआ था। पोर्ट लुई के राष्ट्रीय पुस्तकालय में 'जागृति' पत्र का अंक १२ से लेकर अंक १९५ तक उपलब्ध हैं । संख्या १२ वाला अंक शुक्रवार १७ जनवरी १९४० को प्रकाशित हुआ था और संख्या १९५ वाला अंक शुक्रवार २२ दिसम्बर १९४४ को प्रकाशित हुआ था। श्री सोमदत्त बखोरी ('Hindi in Mauritius', 1967, pp 82) के मतानुसार 'जागृति' साप्ताहिक पत्र था, जिसका प्रकाशन अक्तूबर १९३९ से लेकर मार्च १९४५ तक होता रहा। श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ ('आर्य समाज और हिन्दी विश्व संदर्भ में', २००९, पृ० २००) के कथनानुसार १९२४ से प्रकाशित हो रहे 'मोरिशस आर्य पत्रिका' १९४० में नाम बदलकर 'जागृति' हो गया। इसी बात का समर्थन करते हुए श्री प्रह्लाद रामशरण ('प्रह्लाद रामशरण साहित्य मर्मज्ञ एवं इतिहास वेत्ता', २००८, पृ० ४२४) कहते हैं कि 'मोरिशस आर्य पत्रिका' का पुनः नामकरण किया गया और 'जागृति' नाम से उसका प्रकाशन होने लगा, क्योंकि चंद अज्ञात लोग इस पत्र के प्रकाशन को लेकर आपत्ति कर रहे थे। श्री एम०एन० वर्मा ('Arya Samaj and Arya Sabha', 1998, pp 81) भी श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ एवं श्री प्रह्लाद रामशरण के विचार का समर्थन करते हैं ।

प्रकाशन-तिथि को लेकर विद्वानों में मतभेद है। परन्तु उपलब्ध अंकों के आधार पर यदि अनुमान लगाकर देखें तो इस पत्र की शुरुआत १९३९ में ही हुई थी। अगर १२ वाँ अंक १७ जनवरी १९४० में प्रकाशित हुआ था और यह पत्र साप्ताहिक था तो इस हिसाब से १ नवम्बर १९३९ को इसका प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। प्रारंभ में इसके संपादक तमिलभाषी पं० नारायण संजीवी थे। ४ जुलाई १९४१ से पंडित वेणीमाधव सतीराम इसका संपादन कार्य संभालने लगे थे। श्री प्रह्लाद रामशरण ('मॉरीशसिय आर्य समाज की विभूतियाँ' २०१२, पृ० ९४) के मतानुसार पं० नारायण संजीवी एक योग्य पत्रकार एवं संपादक थे। पं० वेणीमाधव सतीराम के बारे में उनका विचार इस प्रकार है :-

"पं० वेणीमाधव सतीराम संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् थे। वे संस्कृत में संभाषण करने में समर्थ थे। उन्होंने कालक्रम से 'मॉरीशस आर्य पत्रिका', 'जागृति', 'जागृति-आर्यवीर', 'जनता', 'आर्योदय', 'समाजवाद', आदि पत्र-पत्रिकाओं का वर्षों संपादन किया था।"

'जागृति' त्रिभाषी पत्र था। यह हिन्दी, अंग्रेज़ी और फ्रेंच में प्रकाशित होता था। इसका मुद्रण एवं प्रकाशन 'द वैदिक प्रेस' से होता था और इसका पता था १६ फ्रेर फ़ेलिक्स दे वाल्वा स्ट्रीट, पोर्ट लुई। पं० नारायण संजीवी इसके मुद्रक और मालिक थे। 'जागृति' का आदर्श वाक्य था 'उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'। ठीक इसके नीचे ही इसका अर्थ लिखा होता था - 'उठो ! जागो ! और उन्नत राह बताने वालों को पहचानो' ।

आर्य समाज द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं ने पददलित हिन्दुओं को ऊँचा उठाने का कार्य किया। हिन्दुओं के आदर्शों, मूल्यों, संस्कारों के साथ-साथ उनमें नवीनता एवं आधुनिकता का संचार किया । मॉरीशस और देश-विदेश में बसे हिन्दुओं की शोचनीय दशा का वर्णन 'जागृति' करता था। हिन्दू धर्म से संबंधित अनगिनत लेख छपते रहते थे। यथा - 'ईश्वर किसी का अनिष्ट नहीं करता', 'ईश्वर प्रार्थना', 'धर्मोपदेश', 'तीन देवियाँ' इत्यादि।

राजनीतिक परिवेश की पहचान कराकर अपनी अस्मिता पर मँडराते खतरे को महसूस कराना 'जागृति' का उद्देश्य था। सामाजिक त्रुटियों को उद्‌घाटित कर 'जागृति' हिन्दुओं को सतर्क एवं सचेत कराता था। हिन्दू मज़दूरों ने शराब, प्रमाद, विलासिता, लोभ जैसे व्यसनों को गले लगा रखा था। वे सत्य, श्रम, सदाचार से नज़रें चुराने लग गये थे। दारिद्र्य को अपनी नियति मान बैठे थे। 'जागृति' हिन्दुओं की संकुचित मनोवृत्ति को मारकर उन्हें जागरूक बनाता था। उन्हें अपने जीवन का पुनर्निमाण करने का विचार देता था। इस निमित्त दमदार लेख छापने में 'जागृति' भय नहीं खाता था। इसके लेखों के शीर्षकों का उदाहरण इस प्रकार है - 'लोभ और दरिद्रता से मृत्यु अच्छी', 'उद्योग बिना प्रारब्ध नहीं खुलता', 'क्या शिक्षा ज़रूरी है?', 'धन की लीला', 'शुद्धि', 'मज़दूरों में विलासिता' आदि। भारतीय मज़दूरों को आदर्श का पाठ पढ़ाने हेतु दार्शनिकों, विद्वानों, राजनेताओं पर प्रभावशाली लेख छापे जाते थे। पं० जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गांधी, हिटलर, एम. चर्चिल, सुभाषचंद्र बोस आदि नेताओं के विचार छपते थे। हिन्दी भाषा एवं संस्कृति की सुरक्षा हेतु 'जागृति' प्रयत्नशील था। उदाहरणार्थ 'हिन्दी समाचार पत्र और हिन्दू' शीर्षक के अन्तर्गत छपीं ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं -

"आर्य संस्कृति और रीति-नीति को जीवित रखने के लिए हिन्दी पत्र की कितनी बड़ी ज़रूरत है, इसका खयाल करने की तकलीफ़ हमने कभी की ही नहीं । हमने उच्चादर्श को सामने रखकर 'जागृति' निकालना प्रारंभ किया है।" (जागृति, ८ नवंबर १९४०)

हिन्दुओं की आँखों पर पड़ी पटटी हटाने के लिए 'हृदय को कोमल बनाओ' शीर्षक लेख की पंक्तियाँ विचार करने योग्य हैं –

"गैर जातियों के विचार विस्तृत हैं, वे दूर तक देखते हैं। इसलिए उनके वास्ते दुनिया में असम्भवता का स्थान नहीं है। परन्तु हमारे वास्ते सब काम कठिन हैं।..... यदि हम चाहते हैं कि हमारा दारिद्र्य कटे तो हमें अपने भाई के कार्य में सहयोग देना चाहिए।" (जागृति, १ नवंबर १९४०)

हिन्दुओं की संकीर्ण मानसिकता को दूर भगाना और हिन्दू समाज को व्यापक दृष्टि प्रदान करना 'जागृति' का कर्त्तव्य था। फीजी, जावा एवं अन्य देशों में जहाँ हिन्दू बसते थे, उनकी दशा के बारे में सूचित कराना 'जागृति' का काम था।

इस प्रकार यह कहना सर्वथा समीचीन है कि 'जागृति' ने मॉरीशस के हिन्दुओं के उन्नयन में चहुमुखी भूमिका निभायी है। **क्रमशः**

गाड़ीवान रैक्व ऋषि

विश्वदेव मुनि (वान्प्रस्थी)

प्राचीन काल में एक था राजा, नाम था जानश्रुति। उसकी तीन पीड़ियों के बुज़ूर्ग जीवित थे। इस संयुक्त परिवार में पुत्र-पौत्रों से घर भरा था। इसलिये उसके राज्य में, और आस-पास के राज्यों के लोग में वह पौत्रायाण कहलाता था। दान बहुत देता था, लंगर तो प्रतिदिन लगाता था। गाँवों तथा शहरों में धर्मशालाएँ खोल रखी थीं । यात्री लोग के खाने-पीने की सब व्यवस्था प्रतिदिन बरा-बर कायम थी। साधु-संतों की भीड़ लगी रहती थी ।

एक दिन कुछ पहुँचे हुए धर्मात्मा भी वहाँ आथित्य करने पहुँच गये। वे राजा के बारे में आपस में अपनी-अपनी प्रशंसा करने लगे तो एक ने उनको सावधान किया कि राजा के बारे में कुछ ऐसी-वैसी बातें मत करना जिससे उनसे बाद-विवाद हो जाये, क्योंकि वह बहुत पहुँचे हुए ज्ञानी है। दूसरे ने कहा कि आप तो ऐसे कह रहे हैं जैसे वह 'गाड़ीवान' रैक्व ऋषि के बराबरी हो । उसने पूछा कि रैक्व ऋषि कौन है?

तीसरे ने कहा कि जो लोग अच्छे काम करते हैं तो श्रेय उस ऋषि को ही जाता है क्योंकि उसके ज्ञान कर्म स्वभाव एक उदाहरण बन गया है। अन्य ऋषि-मुनि भी उनके आगे नतमस्तक होते हैं ।

राजा जी इन सब बातों को सुन रहे थे। उत्कंठित हुए उनका दर्शन के लिये जिससे उनके ज्ञान की प्रगति हो । अपने सारथी भेजा उस संत को ढूँढ़ने। वह शहरों, गाँवों में, भीड़ में, ठाकुरों की कोठियों में, हर जगह ढूँढे, पर खाली हाथ लौटा । राजा ने कहा कि संत तो भीड़ों में नहीं मिलते, वे झोंपड़ियों में, नदियों के तट पर, गुफ़ाओं में एकान्त स्थानों में मिलते है।

पुनः सारथी निकला ढूँढ़ने । देखा एक गाड़ी के नीचे कोई बैठा है, फटे पुराने वस्त्रों में, पूछा, तो उत्तर मिला कि हाँ, मैं ही हूँ गाड़ीवान रैक्व ऋषि । सारथी लोटा तो राजा ने बहुत धन, गाड़ी घोड़े, गायें आदि दक्षिणा के रूप में लेकर ऋषि के पास पहुँचे और उनसे करजोड़ प्रार्थना की कि ये रत्न, ये गौवें, यह रथ और सारथी, साथ में मेरी कन्या पुत्री आपकी सेवा करेगी, ये सब आप की भेंट करता हूँ, मुझे आप का शिष्य बना दीजिये, मुझे शिक्षा दीजिये।

रैक्व ऋषि को उस राजकुमारी की लाज रखने के लिये बाधित होना पड़ा । अतः राजा को उपदेश देने लगे :–

जब अग्नि बुझ जाती है तब वायु में लय हो जाती है, जब सूर्य अस्त हो जाता है तब वायु में चला जाता है, जब पानी सूख जाता है तब वायु में लय हो जाता है । वायु ही इन सबका 'संवरण' कर लेता है, वायु में वर्तमान होते हैं, नष्ट नहीं होते हैं, अथार्त् प्रलय के बाद, अदृश्य रहते हैं । जैसे ब्रह्मांड में सब कुछ लय हो जाता है, वैसे ही पिंड (शरीर) में जब वाणी बोल नहीं सकती वह प्राण में चली जाती है, जब आँख, कान आदि इन्द्रियाँ नहीं काम कर सकती हैं तो प्राण सब का 'संवरण' करते हैं। इस विषय को 'संवर्ग-विद्या' कहते हैं । इस प्रकार ब्रह्मांड तथा पिंड के लय के दो स्थान हैं, एक दैवीय-जगत्, अथार्त् ब्रह्मांड में वायु, दूसरा आत्मिक-जगत् अथार्त् पिंड में प्राण ।

इस कथानक को लेकर कुछेक दो बातें पर ध्यान देना अनिवार्य है :- पहली यह है कि राजा ने धन आदि और अपनी कुमारी कन्या का प्रलोभन देकर 'संवर्ग-विद्या'- आध्यात्मिक विद्या की शिक्षा प्राप्त करने राजा आया होगा। वह तो पहुँचे हुए ऋषि थे ही, मन की बात जानने वाला । इस मन का सन्देह नकार कर ऋषि ने राजा को ज्ञान प्रदान किया।

इसी कारण गाड़ीवान रैक्व ऋषि ने राजा को शूद्र शब्द से सम्बोधित करके ही उपदेश दिया था।

तो यह 'संवर्ग विद्या' का वर्णन किया कि ब्रह्मांड की सब दृश्य वस्तुएँ अदृश्य-रूप में वायु में विद्यमान रहती हैं, वैसे ही पिंड में सब कर्मेन्द्रियाँ प्राण में समा जाती हैं। संवर्ग -विद्या प्राण-विद्या का ही नाम है।

अभिमानी राजा का सर झुक गया होगा, लज्जा के मारे क्योंकि उनका अगाध धन तथा प्रलोभन कुछ काम नहीं आया। क्या जाने कि राजा के कोष में भ्रष्टाचार, अनुचित धन भी आता होगा और तो और वृद्ध रैक्व ऋषि उतना बड़ा दान के तले दब कर मर ही जाते। विद्या का धन सब से बड़ा धन, निःशुल्क मिल गया।

याद रहे इस प्रकार का प्रलोभन एक राजा-महाराजा सज्जन सिंह, ने ऋषि दयानन्द जी को अपने शिव मन्दिर की गद्दी, लाखों रुपए भेंट किये थे और इस शर्त पर कि वह मूर्ति पूजा का खंडन छोड़ दें। ऋषि जी का उत्तर तो आप जानते ही हैं - लात मार कर वहाँ से चल दिये !

Source : Chandogya Upanishad

श्रावणी

विष्णुदेव बिसेसर

यज्ञ का प्रयोग और अनुष्ठान परम पिता परमात्मा तथा आदि शक्ति के लिए निभाया जाता है। आत्म-विश्वास की महत्ता सर्वोपरि है और मानव के प्रारम्भिक काल से आज तक रही है। वैदिक धर्म मनुष्यों का मूल है। यह धर्म ही धरती और स्वर्ग सभी को अमर बनाने वाला अमृत है। परम्परागत सदाचार, स्मृति और वेद ये तीनों धर्म के स्वरूप का बोध कराने वाले हैं।

वैदिक धर्म हिन्दू धर्म का प्राचीनतम रूप है। चारों वेदों में जो कुछ लिखा है वह सब सत्य है। ईश्वर चारों वेदों और पाँच तत्वों का सबसे उत्तम और इनके विकट व्यवहार है श्रावणी यज्ञ जो आज तक मनाया जाता है।

जब से परमात्मा ने सृष्टि की रचना की है तब से हर साल श्रावण का मौसम निश्चित है। मतलब कि जुलाई और अगस्त में अमृत की बरसात, ठण्ड, मौन सब ओर हरियाली छाई रहती है और यज्ञमय वातावरण छा जाता है।

यदि एक ऐसा पर्व है जिसमें हम किसी जन्मदिवस या किसी महापुरुष या देव-देवी के नाम पर नहीं मनाते हैं। यह पर्व हम केवल परमात्मा, वेद मंत्रों द्वारा और पाँच तत्वों के लिए मनाते हैं।

कहते हैं वैदिक धर्म का विषय बड़ा गहन है जैसे धर्म शब्द की उत्पत्ति धृ धातु में धृ प्रत्यय लगाने से हुई है अर्थात् जो विद्यमान है। सुरक्षित है स्थायी है, जो धारण करने योग्य है।

यानी मनुष्य की मानवता धर्म के धारण करने से ही सुरक्षित है। कहा गया है की **धर्मः रक्षतिः रक्षितः**। अर्थात् धर्म की रक्षा करने से स्वयं की रक्षा होती है। फिर कहा गया है सुगां ऋतस्य पंथा धर्म का मार्ग मानव को सुख देता है। दुख से मुक्त करता है।

अन्त में हमारी प्रार्थना है सभी आर्य, हिन्दू मंदिरों के अलावा अपने घर पर अपने सभी रिश्तेदारों, पड़ोसियों को निमन्त्रण दें। पूरे मास में स्थानीय, प्रांतीय तथा राष्ट्रीय स्तरों में श्रावणी यज्ञ का आयोजन धूम-धाम से आयोजित करना चाहिए। यज्ञ के द्वारा परमात्मा भला करें।

सत्यार्थ प्रकाश जयन्ती (१४२ वीं)

आर्य सभा मोरिशस के तत्वावधान में पाम्प्लेमूस आर्य ज़िला परिषद् ने प्रान्त के पुरोहित-पुरोहिताओं तथा शाखा समाजों के सहयोग से पूरे जून मास में सत्यार्थप्रकाश की १४२ वीं जयन्ती सफलतापूर्वक मनाई । लगभग ३५ स्थानों पर यज्ञ का अनुष्ठान हुआ और सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध सत्संग हुए।

ज़िले के स्तर पर आयोजित सूची अनुसार पुरोहित-पुरोहिताओं ने यथास्थान निर्धारित समय पर पहुँच कर यज्ञ, प्रवचन तथा भजन किये। परिषद् तथा समाज के अधिकारियों द्वारा सन्देश भी हुआ। कुछ शाखा-समाजों में सत्यार्थप्रकाश जयन्ती अत्यन्त प्रभावपूर्ण ढंग से आयोजित की गयी। उदाहरण स्वरूप त्रिओले आर्यसमाज शाखा नं. ६० में पंच दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न किया गया। रविवार १२ जून को परिषद् के प्रधान डॉ० ज. लालबिहारी ने आधुनिक युग में सत्यार्थप्रकाश की प्रासंगिकता पर अपना वक्तव्य केन्द्रित किया।

युवक संघ के कार्यकलाओं ने अपने मधुर संगीत के कार्यक्रम से सबको प्रभावित किया। श्री धरम गंगू जी का प्रवचन प्रश्नोत्तर शैली में अनोखे ढंग से हुआ जो श्रोताओं को अधिक पसन्द आया। परिषद् के अधिकारी लोग भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

मोर सेल्मां सेंतान्द्रे न. ७ तथा न. १३६ में हमेशा की तरह सत्यार्थप्रकाश जयन्ती अत्यन्त प्रभावकारी रूप से मनायी गयी। वरिष्ठ पुरोहित पं० माणिकचन्द जी का सत्यार्थप्रकाश प्रवचन हुआ। स्थानीय भजन मण्डली द्वारा सत्यार्थप्रकाश पर मनोहारी भजन हुए। अन्त में सबको भोजन से सत्कार किया गया।

प्वेंत ओ पिमां गाँव में जहाँ कोई स्थानीय समाज मंदिर नहीं, वहाँ घर-घर में पाँच कार्यक्रम भोजन के साथ सम्पन्न किये गये। स्थानीय भजन मण्डली द्वारा सत्यार्थप्रकाश और महर्षि दयानन्द सरस्वती पर सुन्दर भजन प्रस्तुत किए गये।

ज़िले के स्तर पर सर्वाधिक सफलतापूर्वक सत्यार्थप्रकाश जयन्ती की पूर्णाहुति बुधवार ०६.०७.१६ को फों जु साक आर्य मन्दिर में आयोजित की गई । महायज्ञ में लगभग १५० से अधिक आर्य परिवारों की उपस्थिति रही। सर्वाधिक सहयोग पुरोहिता पं० निर्मला रामखेलावन, स्थानीय आर्य महिला समाज तथा पुरुष समाज पाम्प्लेमूस आर्य ज़िला परिषद् कोषाध्यक्ष का रहा।

आर्य सभा के महामन्त्री श्री सत्यदेव प्रीतम जी, परिषद् प्रधान डा० जयचन्द लालबिहारी जी, मन्त्री श्री शेखर रामधनी, श्री गृजानन्द तिलक तथा श्री राजनारायण गति जी की उपस्थिति रही। आर्यन वुमेन आसोश्येशन की प्रधाना श्रीमती पूनम तिलकधारी जी तथा श्री विकास तिलकधारी जी भी उपस्थित रहे। परिषद् की ओर से डॉ. ज. लालबिहारी ने सत्यार्थप्रकाश के महत्त्व पर प्रकाश डाला। महामन्त्री श्री प्रीतम ने अपने संक्षिप्त वक्तव्य में श्री गति जी सत्यार्थ प्रकाश में निहित संदेश का उल्लेख किया। परिषद् के मन्त्री श्री शेखर ने धन्यवाद ज्ञापन किया। श्रीमती रश्मि लालबिहारी ने बहुत ही आकर्षक ढंग से कार्यसंचालन किया। वरिष्ठ पुरोहित पं० मानिकचन्द बुद्धू जी का प्रवचन प्रभावशाली रहा। तथा श्री राजेश्वर मधु की भजन मंडली द्वारा सुन्दर भजन भी प्रस्तुत किये गये।

कार्यक्रम के अन्त में सभी लोगों को महाप्रसाद से सत्कार किया गया ।

प्रेषक - पं० एम. बुद्धु

AUM

The President & Members

Mauritius Arya Yuvak Sangh

under the aegis of

ARYA SABHA MAURITIUS

extend a cordial invitation to you to attend the celebration of the

24th National Arya Yuva Divas & 69th Anniversary of the Independence of India

Venue : Ramawtar Mohith Hall, L'Agrement, St. Pierre
Date : Monday 15 August 2016
Time : 2.00 p.m. – 4.00 p.m.

Chief Guest **: Hon. Pravind Kumar Jugnauth, Minister of Finance and Economic Development**

Special Guests : **Hon. Leela Devi Dookun-Luchoomun, Minister of Education & Human Resources, Tertiary Education & Scientific Research**

Several other distinguished guests will grace the function by their presence.

Your presence will be highly appreciated.

Mauritius Arya Yuvak Sangh	D. Gangoo	S. Nowlotha	
Arya Sabha Mauritius	Dr. O.N. Gangoo	S. Peerthum	R. P. Ramjee
	President	*Secretary*	*Treasurer*

Valuable pearls from history pages

Pandit Luxmanduth Shastri

We welcome Pandit Luxmanduth Shastri and Mrs Shastri who returned in the Colony from India by the B.I. Sirsa ship on Tuesday 31 December 1936.

Panditji is a native of Mauritius. He left the Colony for India since 15 years ago for higher studies in Sanskrit. He has now returned after completing his studies. He is married to an Indian girl named Sita Devi.

We wish the Pandit success in his missionary work as he is an Arya Samajist Missionary.

Extract from : Arya Vir, 18th December 1936
Contributed by : Pahlad Ramsurrun

Shrāvani: time to review our strategies

Shrāvani Mahotsav is celebrated with much fervour BUT we tend to limit it to the performance of Yajnas and speeches. Speakers treat on diverse subjects during one single programme and at the end very little remains in the minds of the audience.

Shrāvani is time to study the Veda and encourage others to do same. Veda Svādhyāya, especially the bhāshya by Maharishi Dayānand Saraswati should be focal items of the various programmes. Common mantras with inspiring meanings are found across all the writings of this great seer (rishi). Programmes with a key theme connects the audience as the 'fil conducteur' between the various speeches and foster interest thus expand knowledge on the subject matter.

Allocation of time (some 30 minutes) to Veda Svādhyāya will enable us to discover for ourselves that the Veda is the source of all true knowledge… in seminal form, like a seed which will germinate and grow into a flower and fruit loaded tree only when it is cultivated, i.e. benefit from an appropriate environment (soil, water, light, air …etc.) and cared for. Only then the audience would be convinced on the importance of reading and studying the Veda as well as persuade others to read and study the Veda.

Seers have expounded the knowledge of the Veda and simplified much of the ingrained knowledge. In spite of rush and time deficiency **we need to adjust our routine / day-to-day lifestyle for a break, as small as 5-minutes in the morning and evening to listen to the sounds of silence** that the chanting of the Gayatri mantra provides to us …at no cost …save those moments that we have to halt all external activities and delve into only that contemplation / meditation.

In case we shy away from the teachings of the great seers (rishis) we may go to the copycats to learn the basics. The *"Oracle of Delphi"* reports that the famous Greek philosopher Socrates tried several times to find someone wiser than himself. That reveals Socrates' awareness of the limitations of his knowledge, i.e. he was conscious of his own ignorance. This reported event is no new idea; the Vedic precepts commands: *"jeevātmā alpajna hai, Ishvara sarvajna hai,* i.e. the soul possesses limited knowledge whereas God is omniscient. He has infinite knowledge as well as is fully aware of all our actions be they mental, vocal or physical.

The most common mantra is the Gayatri Mantra : **Om bhur bhuvah swah | Tat savitur varenyam bhargo devasya dhimahi dhiyo yo nah prachodayāt ||**

Word meaning (English) :

Om (O Lord); *Bhuh* (Giver of life); *Bhuvah* (Liberator from all pains and sorrows); *Swah* (Cradle of all happiness); *Tat* (To Him); *Savituh* (Creator of the universe); *Varenyam* (The one-and-only worthy of meditation); *Bhargah* (Remover of all evils); *Devasya* (The source of virtue and success); *Dheemahi* (Eager to acquire good qualities, we pray to you; *Dhiyo yo nah Prachodayāt* (May you guide our intellect towards righteousness.)

Word meaning (French) :

Om ou AUM (Ô Seigneur, Vous êtes); *Bhuh* (La source de toutes les formes de vie); *Bhuvah* (Le libérateur de la souffrance et du chagrin) ; *Swah* (Le berceau du bonheur) ; *Tat* (A vous) ; *Savituh* (Le créateur de l'univers) ; *Varenyam* (Le seul que nous adorons) ; *Bhargah* (Vous enlevez le mal) ; *Devasya* (Vous êtes la source de la vertu et le succès) ; *Dheemahi* (Nous désirons vivement acquérir de nobles qualités, ainsi nous vous prions) ; *Dhiyo yo nah Prachodayāt* (De mener notre esprit et nos pensées vers la droiture.)

O All-protecting Lord! Om is your complete name.

All the other names describe your attributes (character, actions and aptitudes). *Each name is not a stand-alone as it depicts only one of the numerous qualities of that supreme power.*

You are the life giving force.

You enable a small seed to force its way out of the soil, sprout and grow into a marvellous fruit-bearing tree. You have supported our growth in the mother's womb (a dark region and surrounded by water), thereafter as a baby, a child, an adolescent, an adult and so on. You sustain life by providing essentials (sun, air, water, earth, space …the raw materials for food, shelter, clothing … etc.) for all species.

You eliminate pains and sorrows.

Life is complex. Extremes (hot-cold, floods-droughts, luxury-poverty, joy-sorrow …etc.) are observed at various places and times. These cause physical and mental suffering.

Your divine inspiration, within the inner-self of those with unwavering deep-rooted faith in you, enables them to surf their way out of pains and sorrows.

You are All-blissful and source of happiness.

The morning sun dispels physical darkness. The Vedas as the true source of true knowledge and all that is derived therefrom dispels the darkness of ignorance.

The universal Vedic values (*Dharma*) serve as a booster to uplift the physical, moral / spiritual and social standards of all, a holistic view of the quality of life.

Once adopted, these values empower seekers of true knowledge to realise the true purpose of human life: (1) ***Dharma*** - lead a virtuous life throughout; (2) ***Artha*** - acquire material and spiritual treasures; (3) ***Kama*** - be virtuous while utilising the material treasures and deriving happiness therefrom; (4) ***Moksha*** - liberation from the cycle of birth and death after attaining self and God-realisation.

You are the Supreme power and creator of the universe.

Human vocabulary is limited and fall short of words to fully describe You. The references in the Vedas are beyond the understanding of the common man. Sages have put up their greatest effort to highlight your grandeur.

Modern science has acknowledged the limitations of its telescopes while exploring your creation – this vast universe; our solar system is but only a microscopic particle.

The order prevailing in the cosmos, the multiple rotations without any collision confirms your supreme power.

You are vital, the <u>one-and-only</u> worthy to be worshipped.

Your power …sublime; character, actions and aptitudes … unequalled by none. You are ever caring.

As parent (***mātā-pitā***) you provide non-stop inspiration whenever one gears his thoughts, speech and body into actions.

As teacher (***guru***) you have shared your knowledge, empowering living beings to realise their goals.

As the impartial judge (***nyāyakāri***) you match the returns of the (karmas) actions of souls: rewards for good actions and punishment for bad actions. You are Omnipresent (***sarvavyāpaka***) – All-Pervading or simultaneously present at all times and all places. You are Omniscient (***sarvajya***) – All-knowledgeable – have perfect knowledge of all the actions of souls. Thus, nothing escapes your attention.

You answer our prayers but require us first to put up committed efforts. You always stand-by-our-side, motivate us to positive actions and discourage us from bad deeds.

Over and above the five cognitive senses (*jnānendriyan*) to acquire knowledge, the five organs (*karmendriyan*) to act, you have given us the intellect, mind power (*antahkarana, i.e. buddhi, mana*) to differentiate between truth vs incomplete knowledge and untruth (*satya-asatya*); virtue vs vice (*dharma-adharma*); duties, rights, responsibilities vs inaction or conflicting actions, irresponsibility / disloyalty (*kartavya-akartavya*).

Without your support we are nowhere, like the boat without a rudder.

You are the All-virtuous, perfect and remover of all evils.

You inspire us to be virtuous at all times and lead us towards success.

You possess countless divine qualities and powers. The luminous aspect relates to both physical and spiritual enlightenment. It suffice to follow your guidance or the inner voice within us to be able to turn away from evil.

Besides the knowledge that you have passed on to us through (rishis) sages you have also provided us with the methodology for leading a balanced life so that we may rapidly integrate that knowledge in our day-to-day life.

You do not remove our evils like a magician with a few passes of his magical stick. Neither do You remove them by our taking special baths or visiting specific places. We have to put up colossal efforts to listen to the divine guidance and act accordingly. Then and only then we shall succeed in sweeping off evil at the level of our thoughts-speech-deeds (*manasā, vāchā & karmanā*) or mind-body-spirit (*mana, shareera & ātmā*).

We deeply desire to acquire righteous qualities.

Glorifying God (*Stuti*) is not done to please God as He is unchangeable. He is all-blissful and our good or bad actions does not affect him. He only keeps the records for the purpose of (*karmaphala*), i.e. to give us the fruits of our actions. Chanting the qualities of God leaves imprints like the drops of water falling over a stone for a very long time. Gradually we shall embrace these noble qualities like the tempestuous water in a pond calms down over time.

The spur to err, commit sins and drift away from correct behaviour will be completely destroyed. We shall attain spiritual reality and shine amongst our relatives and friends with a bright/noble temperament. The divine qualities serve as lighthouse to safely reach port.

O Lord! May you inspire our intellect with the finest character, actions and exceptional talents!

A vessel with holes cannot be filled with water. Likewise we should patch up the holes of anger, greed, infatuation, lust, misunderstanding …etc. to be eligible to receive the blessings of God. He is our benefactor and we are the beneficiaries.

The Gāyatri mantra is a universal prayer. It includes "we" and NOWHERE the singular I, me, my or myself. **It teaches us that we are part and parcel of a larger organisation: Humanity.**

The Gayatri Mantra is never chanted for the purposes of material gains, physical or otherwise. It is no means to whitewash our past deeds nor to spare us from the rewards / punishment arising our of these deeds. It is an appeal to the Lord to illumine our mind and progress to (*medha buddhi*) a sharp discerning intellect.

Intellect is the differentiating faculty of the mind

(i) Truth vs untruth; (ii) good vs bad; (iii) virtue vs vice; (iv) duties, rights and responsibilities vs carelessness and disorder; …etc. That discerning power needs to be sharpened daily by regularly using it as a tool failing which its strength will diminish just like an unused tool accumulates dirt / rust and loses its sharpness.

All problems are solved if the person is endowed with the gift of righteous wisdom.

He who has such a gift neither gets entangled in calamity nor treads on the wrong path. Wise persons sooner or later find solutions to all problems. May we tune our mind-set, our speech and actions to be the vessel to receive such enlightenment!

Oh Lord! May we receive thy supreme sin-destroying enlightenment! May you guide our intellect towards righteousness!

Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanāchārya
Arya Sabha Mauritius

Bibliography : Vedārambha Sanskāra, Satyārtha Prakāsh, YajurVeda Bhāshya by Maharishi Dayānand Saraswati

ARYA SAMAJ PANDITS PASS ON

July 27, 2016 was a sad day for the Arya Samaj SA when it lost two of its most senior pandits, B Behadar, 81 years and R Piyarilall, 77 years. Both pandits had served the cause of the Arya Samaj and Vedic religion with deep dedication, humility and distinction throughout their lives. The Arya Samaj is proud to have had stalwarts of such calibre in its midst who continued to render selfless service to society right until their last days. Their legacies are shining examples of lives purposefully and meaningfully lived, and serve as inspirations to the generations to come.

Pandit B Behadar

Panditji grew up in Malvern as an only child and studied at Sastri College where he obtained his teaching qualification. He went on to obtain his BA and B Ed degrees through UNISA. His thirst for knowledge led him to enrol for Sanskrit at the University of Durban-Westville where he graduated with Honours in Sanskrit. Panditji began imparting the knowledge gained by lecturing at the Springfield College of Education and he also held various teaching posts, his final one being principal of a high school.

Panditji taught Hindi at the Clairwood Yuvak Arya Samaj for several years. He performed the sixteen sanskaras on countless occasions and was a much sought after pandit by the community. The January 1 Mahayajna performed annually will always be associated with Panditji who gave detailed expositions of Vedic mantras to appreciative audiences. Panditji also rendered prison services to inmates where he imparted spiritual knowledge and offered tuition for the Samaj's religious exams in English. A number of inmates obtained distinctions in their studies.

Panditji served in various leadership positions at the Arya Partinidhi Sabha SA, reaching its highest office of President for a term. His maintained a high standard as Chief Tutor for the Purohit course.

Listeners of Radio Hindvani woke up to Panditji 's voice during the early morning shows from 6h00 to 7h00 for 15 years where he presented inspirational gems of wisdom from the Vedas which set a positive tone for the day ahead.

Pandit R Piyarilall

Panditji came from a family rich in culture and religious practice. After graduating as a pandit from the Vedic Purohit Mandal he began spreading the teachings of the Vedas in earnest amongst the community. In addition to performing the prescribed sixteen sanskaras, he aggressively promoted the exams of the Veda Niketan in English. He offered Hindi and music classes at the Isipingo Arya Samaj but later moved to Westville after his home tragically burnt down. Pandiji's philosophical acceptance of the cruel hand fate had dealt him showed he was a developed soul, being of even mind in good and bad times.

Panditji held various leadership positions at the Arya Pratinidhi Sabha SA and led the Vedic Purohit Mandal for a number of years. Under his leadership, the format of mahayajnas was changed where a team of pandits would expound on specific mantras within a given theme for the event, with explanations in English. The knowledge shared resonated with modern audiences.

Panditji's passion was traditional folk music. He studied under Ustad Hari Singh and mastered playing musical instruments like the sarangi, violin, harmonium and tabla. He continued to offer music classes at the Westville Hindu School until he fell ill.

Panditji often quoted gems of wisdom from Kabirdas, his favourite philosopher, and Tulsidas in his interactions with others. Panditji had a keen sense of humour and would often have audiences laughing at his witticisms.

May the music of the heavenly regions soothe the souls of our beloved pandits who gave so much of themselves so lovingly during their earthly journey.